

# दरमानी लाल के रिगाल से बनी डिजायनों का जलवा



उम्र के जिस पडाव पर अमूमन लोग घरों की चाहरदीवारी तक सीमित होकर रह जाते हैं वहीं सीमांत जनपद चमोली की बंड पट्टी के किरूली गांव निवासी 63 वर्षीय दरमानी लाल जी इस उम्र में हस्तशिल्प कला को नयी पहचान दिलाने की मुहिम में जुटे हुए हैं। वे विगत 40 सालों से रिगाल के विभिन्न उत्पादों को आकार दे रहे हैं। रिगाल के बने कलमदान, लैंप सेड, चाय ट्रे, नमकीन ट्रे, डस्टबिन, फूलदान, टोकरी, टोपी, स्ट्रैं सहित विभिन्न उत्पादों को इनके द्वारा आकार दिया गया है। आज इनके द्वारा बनाए गए उत्पादों का हर कोई मुरीद है। कई जगह ये रिगाल हस्तशिल्प के मास्टर ट्रेनर के रूप में लोगों को ट्रेनिंग दे चुके हैं।

उत्तराखंड में वर्तमान में करीब 50 हजार से अधिक हस्तशिल्प हैं जो अपने हुनर से हस्तशिल्प कला को संजो कर रखें हुये है। ये हस्तशिल्प रिगाल, बांस, नेटल फाइबर, ऐपण, काष्ठ शिल्प और लकड़ी पर बेहतरीन कलाकरी के जरिए उत्पाद तैयार करते आ रहे हैं। लेकिन बाजार में मांग की कमी, ज्यादा समय और कम मेहनताना मिलने की वजह से युवा पीढ़ी अपनी पुरतैनी व्यवसाय को आजीविका का साधन बनाने में दिलचस्पी कम ले रही है। परिणामस्वरूप आज हस्तशिल्प कला दम तोडती और हांफती नजर आ रही है।

चमोली जनपद के कुलिंग, छिमटा, पज्याणा, पिंडवाली, डांडा, मज्याणी, बूंगा, सुतोल, कनोल, मसोली, टंगणी, बेमरू, किरूली गांव हस्तशिल्पियों की खान है। इन गांवों के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन हस्तशिल्प है। किरूली गांव के 63 वर्षीय दरमानी लाल विगत 40 सालों से रिगाल का कार्य करते आ रहे हैं। बकौल दरमानी लाल जी रिगाल की टोकरी और अन्य उत्पादों की जगह अब प्लास्टिक ने ले ली है। पहाडो में पलायन की वजह और गांव में खेती की तरफ लोगों का रूझान खत्म हो गया है जिससे रिगाल के उत्पादों की मांग घट गयी है। परिणामस्वरूप आज हस्तशिल्प व्यवसाय पर भी संकट गहरा गया है। जिस कारण अब हस्तशिल्प कला से परिवार का भरण पोषण करना बेहद कठिन हो गया है। लोगों को मजबूरन हस्तशिल्प की जगह रोजगार के अन्य विकल्प ढूंढने पड रहे हैं।

वहीं अपने पिताजी दरमानी लाल जी के साथ रिगाल के उत्पादों को तैयार कर रहे राजेन्द्र कहते हैं कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में रिगाल के उत्पादों की भारी मांग है परंतु हस्तशिल्पियों की तस्वीर नहीं बदल पाई है। जबकि हस्तशिल्प रोजगार का बड़ा साधन साबित हो सकता है। यदि हस्तशिल्प उद्योग और

हस्तशिल्पियों को बढ़ावा और प्रोत्साहन मिले तो पहाड़ की तस्वीर बदल सकती है। बाजार की मांग के अनुरूप हमें नये लुक और डिजाइन पर फोकस करना होगा। पीपलकोटी की आगाज फैडरेशन जरूर इस दिशा में हस्तशिल्पियों को समय समय पर प्रशिक्षित करती रहती है।

वास्तव में देखा जाए तो हमारी बेजोड हस्तशिल्प कला और इनको बनाने वाले हुनरमंदों का कोई शानि नहीं है। आवश्यकता है ऐसे हस्तशिल्पियों को प्रोत्साहित करने और बाजार उपलब्ध कराने की। 20 दिसम्बर से 26 दिसम्बर के मध्य आयोजित होने वाले बंड विकास मेले में आपको दरमानी लाल जी और उनके पुत्र राजेन्द्र के बनाये रिगाल के उत्पादों को देखने और खरीदने का अवसर मिलेगा। अगर आपको इनके बनाये रिगाल के उत्पाद पसंद हैं तो आप इनसे सम्पर्क कर सीधे फोन पर डिमान्ड भी दे सकते हैं।  
राजेंद्र 87550 49411

संस्कार परिवार देहरादून द्वारा चलाए गए स्वरोजगार और रिवर्स पलायन अभियान के अंतर्गत आध्यात्मिक गुरु आचार्य विपिन जोशी उनको सम्मानित करने जल्दी ही उनके गांव जाएंगे। आपके आसपास भी अगर इस प्रकार की प्रतिभाएं हैं जो कुछ प्रेरणा दायक कार्य कर रही हैं तो आप निम्न नंबरों पर उसका विवरण व्हाट्सएप करें।

9149304654

9412053749